बाइबल टीचर

वर्ष 20 | दिसम्बर 2022 | अंक 1

सम्पादकीय

परगाटोरी
(Purgatony)

हर साल नवम्बर के महीने में लोग उन लोगों की यादगारी मानते हैं जो इस संसार से चले गये हैं। उनको याद करके खाना खिलाया जाता था मांस की जाती है। कैथेलिक लोग मास मनाकर मुर्दों को याद करते हैं। लोग यह सोचते हैं कि यह सब करने से उन आत्माओं को शांति मिलती है। कुछ लोग यह सिखाते और मानते हैं कि परगोटोरी स्थान में आत्माओं का शुद्धिकरण होता है तथा वहां उन्हें यह अवसर मिलता है कि वे पश्चताप करके अपने आपको परमेश्वर के न्याय से बचा सकें। बाइबल ऐसा कुछ नहीं सिखाती। बाइबल कहती है कि मनुष्य के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना पक्का हैं (इब्रा. 9:27)।

बाइबल हमें यह शिक्षा देती है कि यीशु ने हमारे पापों के लिये अपने ये बलिदान कर दिया और हमारा सदाकाल का उद्धार का कारण बन गया। अब कोई ऐसा तरीका नहीं है कि हम अपने कार्यों के द्वारा किसी आत्मा को नर्क से बचा सकें। परगोटोरी एक ऐसी शिक्षा है जो यह सिखाती है कि हम पापों से बचने के लिये परमेश्वर से बार्गेन कर सकते हैं। जब कोई व्यक्ति इस संसार को छोड़कर चला जाता है तब उसकी आत्मा अनन्तकाल में प्रवेश करके न्याय के दिन का इंतजार करती है। पाप एक ऐसी बीमारी है जो मनुष्य की आत्मा को खा जाती है। इससे बचने के लिये परमेश्वर ने मनुष्य को एक उपाय दिया है और वो है यीशु ने विश्वास लाकर उसके सुसमाचार को मानना। (मरकुस 16:16, प्रेरितों 2:38)। परमेश्वर जो दया का धनी है उसने मनुष्य के लिये समाधान दिया है परन्तु कोई बार्गेन नहीं। आत्मा को नरक से बचाने के लिये आप के पास कोई संसाधन नहीं होता जब मनुष्य की मृत्यु हो जाती है।

प्रभु यीशु परमेश्वर के सामने हमारा एक विचवई है। (1 तीमु. 2:5)। हम कभी भी अपनी शर्तों से किसी की आत्मा को बचा नहीं सकते। परगोटरी जैसी शिक्षा एक ऐसी शिक्षा है जो यह बताती है कि प्रार्थना के द्वारा आत्मा को नाश होने से बचाया जा सकता है। जब यीशु ने अपना बलिदान हमारी आत्माओं को बचाने के लिये दे दिया है, तब परगोटरी की क्या आवश्यकता है तब परगोटरी की क्या आवश्यकता है। हमें पता है कि हम पापी है और हमारे पापों से हमें बचाने के लिये परमेश्वर अपने पुत्र को दे दिया है तब परगोटरी जैसे किसी भी स्थान की आवश्यकता नहीं है। केवल प्रभु यीशु ही, इस योग्य है जो हमारे पापों से हमें बचाकर शुद्ध कर सकता है। (1 यूहन्ना 1:7)।

प्रेरित पौलुस मसीहियों को बताता है, ''परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की प्रेस की भलाई इसी रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी थे तभी मसीह हममारे लिये मरा। सो जबकि हम सब उसके लोहू के द्वारा धर्मी ठहरे तो उसके द्वारों क्रोध से क्यों न बचेंगे? इस आयत से हमें यह शिक्षा मिलती हैं कि हम उसके लोहू के द्वारा धर्मी ठहरें हैं। क्योंकि हमने उस पर विश्वास करके उसकी आज्ञा को माना है। परगोटोरी जैसी शिक्षा पर हो विश्वास नहीं करना चाहिए। ऐसी बातें मनुष्य को मूर्ख बनाते हैं। चाहे आप कितनी भी प्रार्थनाएं करवा लें, या बड़े से बड़े प्रीस्ट से मिल लें आप एक मरे हुए व्यक्ति की आत्मा का कोई शुद्धिकरण नहीं कर सकते और न ही उसको स्वर्ग में पहुंचा सकता है। जब मनुष्य की आत्मा चली जाती है तब उसे परमेश्वर के न्याय का सामना करना है। (रोमियों 14:12)।

पापों की क्षमा केवल परमेश्वर के हाथ में है, मनुष्य के हाथ में कुछ नहीं है। पाप क्षमा करने का अधिकार केवल यीशु का है। (मरकुस 2:10)। किसी भी धार्मिक गुरू या प्रीस्ट के पास यह सामर्थ नहीं है कि वह आपके पाप क्षमा कर सके और नहीं परगाटोरी जैसा कोई स्थान है जहां आत्मा का शुद्धिकरण हो सके। कई लोग ऐसा आत्माओं के लिये दान पुण्य करते हैं। परन्तु बाइबल कहीं भी ऐसी शिक्षा नहीं देती। हम परमेश्वर के दान को खरीद नहीं सकते। (1 पतरस 1:18)।

बाइबल हमें बताती है कि एक दिन हम सब परमेश्वर के न्याय का सामना करेंगे। (2 कुरि. 5:10) यहां हम इस प्रकार से पढ़ते हैं, ''क्योंकि अवश्य है कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाये, कि हर एक व्यक्ति अपने अपने भले बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किऐ हो पाए।'' इसलिये हमें यह समझना चाहिए कि अपने कामों का हिसाब हमें खुद देना है, हमारे बदले में कोई हमारा हिसाब नहीं देगा और नहीं हमें कोई परमेश्वर के दण्ड से बचा पायेगा।

हम जानते हैं कि धनवान पुरुष और लाजर के सामने या उनके बीच में एक बहुत बड़ी खाई थी और कोई एक स्थान से दूसरे स्थान में नहीं जा सकता था। (लूका 16:, 19:31) धनवान मनुष्य अद्योलोक में पीड़ा से तड़पते हुए कहा हे पिता इब्राहिम मुझ पर दया करके लाजर को भेज दे ताकि वह अपननी उंगली का

सिरा पानी में भिगो कर मेरी जीभ को ठंठी करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूं। इब्राहिम ने कहा अब हमारे और तुम्हारे बीच एक भारी राडहा है और कोई भी यहां से पार करके दूसरी ओर नहीं जा सकता। कहने की बात यह है कि जब तक हम इस पृथ्वी पर जीवित हैं हमारे पास अवसर है कि हम अपना मन बुराई से फिरा ले, क्योंकि यहां से जाने के बाद कोई और मौका नहीं और नहीं परगाटोरी।

जिन बातों से परमेश्वर घृणा करता है

सनी डेविड

यों तो परमेश्वर प्रत्येक पाप और बुराई से घृणा करता है, किन्तु बाइबल का एक लेखक नीतिवचन की पुस्तक के छः अध्याय के 16 से 19 पदों में कुछ बातों का वर्णन करके विशेष रूप से यूं कहता है, कि ''छः वस्तुओं से यहोवा बैर रखता है, वरन सात हैं जिन से उसको घृणा है'' और फिर वह उन का एक-एक वर्णन करके इस प्रकार कहता है, ''अर्थात् घमण्ड से चढ़ी हुई आंखें, और झूठ बोलने वाली जीभ, और निर्दोष का लोहू बहाने वाले हाथ, अनर्थ कल्पना गढ़ने वाला मन, और बुराई करने के वेग से दौड़ने वाले पांव, और झूठ बोलने वाला साक्षी, और भाईयों के बीच में झगड़ा उत्पन्न करने वाला मनुष्य।''

और अपने आज के पाठ में हम इन्हीं सात बातों के ऊपर एक-एक करके विचार करके देखेंगे, और विशेषकर इस बात पर ध्यान देंगे कि परमेश्वर क्यों इन सबसे घृणा करता है?

सबसे पहले हम देखते हें, ''घमण्ड से चढ़ी हुई आंखें।'' घमण्ड एक ऐसी चीज है, जो न केवल इंसान को इंसान से, पर इंसान को परमेश्वर से भी दूर कर देता है। बाइबल में हम बहुत से लोगों के बारे में पढ़ते हैं, जो अपने घमण्ड के कारण ही नाश हुए थे। और उन में से एक को 'धनी मूर्ख' के नाम से जाना जाता है। प्रभु यीशु के उसके बारे में बताकर कहा था, कि वह बड़ा धनवान था। और जब उसके खेतों में बहुत भारी उपज हुई थी, तो वह अपने मन ही मन योजना बनाने लगा था, कि मैं अपनी भूमि पर बड़ी-बड़ी बखारियाँ बनाऊंगा, और वहाँ अपना सब धन-सम्पत्ति रखूंगा, और अपने प्राण से कहूंगा कि हे प्राण अब तेरे पास बहुत धन-सम्पत्ति रखी है, सो चैन कर और खा-पी और सुख से रह। किन्तु, प्रभु ने कहा, कि उसी रात को परमेश्वर ने उस धनवान से कहा, कि आज रात को तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा, तो फिर यह सब जो तू ने इकट्ठा किया है किसका होगा? उस धनवान को अपने धन-सम्पत्ति पर बड़ा घमण्ड था। और अपने घमण्ड और अभिमान में मनुष्य तो क्या उसे परमेश्वर की भी याद नहीं थी। घमण्ड मनुष्य

को स्वार्थी बना देता है। एक घमण्डी व्यक्ति केवल अपने ही बारे में सोचता है। उसे न तो मनुष्य की परवाह होती है और न ही परमेश्वर की। घमण्ड के कारण आज बहुतेरे लोग परमेश्वर में विश्वास नहीं करते; क्योंकि वे कहते हैं कि परमेश्वर कौन है कि हम उसमें विश्वास करें? किन्तु परमेश्वर घमण्ड से चढ़ी हुई आंखों से घृणा करता है।

ऐसे ही, परमेश्वर उन लोगों से घृणा करता है, तो झूठ बोलते हैं। झूठ बोलना आज के समाज में एक बड़ी ही आम बात हो गई है। लोग अपने घरों में झूठ बोलते हैं; स्कूल और कॉलेज में झूठ बोलते हैं। लेकिन जो लोग परमेश्वर से डरते हैं, वे जानते है कि परमेश्वर झूठ बोलने वालों से घृणा करता है, इसलिये वे झूठ नहीं बोलते। बाइबल में लिखा है, कि अब जो मसीह यीशु में है वह एक नई सृष्टि है, पुरानी बातें बीत गई हैं, पर अब सब कुछ नया हो गया। (2 कुरि. 5:17)। जो इंसान प्रभु यीशु मसीह का अनुयायी बन जाता है, वह झूठ बोलना छोड़कर सच बोलने लगता है। क्योंकि वह सब बुराईयों से मन फिराकर मसीह के पास आता है।

और फिर हम देखते हैं, कि परमेश्वर निर्दोष का लोहू बहाने वाले हाथ से घृणा करता है। अर्थात्, उन लोगों से जो लड़ाई-झगड़ा करते हैं; जो मार-पीट करते हैं; और हत्या करते हैं। और उन से परमेश्वर घृणा करता है, जो अपने मन में अनर्थ कल्पनाएं गढ़ते हैं। कितने ही लोग हैं, जो अपने मन में ऐसी-ऐसी कल्पनाएं गढ़ते रहते हैं कि वे किस तरह से किसी को हानि पहुंचा सकते हैं। वे अपने मनों में यही सोचते रहते है, कि कहां कैसे तोड़-फोड़ की जा सकती है; वहां किस से कैसे बदला लिया जा सकता है; और कहां क्या नुकसान किया जा सकता है। ऐसे ही लोगों का वर्णन करके आगे कहा गया है, कि उनके पांव बुराई करने को बड़ी तेजी से दौड़ने के लिये तैयार रहते हैं। और वे झूठी गवाही देने से नहीं चूकते; और लोगों में आपस में झगड़ा करवाना उन्हें अच्छा लगता है। लेकिन ऐसे-ऐसे काम करने वालों से परमेश्वर घृणा करता है।

प्रभु यीशु ने सिखाया था, कि धन्य हैं वे जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य हैं वे जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शांति पाएंगे। धन्य हैं, वे जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे। धन्य हैं, वे जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे। धन्य हैं, वे जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी। धन्य हैं वे, जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे। धन्य हैं वे, जो मेल करवाने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे। धन्य हैं वे जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। (मत्ती 5:3-10)।

परमेश्वर मनुष्य से घृणा नहीं करता। किन्तु वह उन सब बुरे कामों से घृणा करता है जिन्हें मनुष्य करता है। क्योंकि परमेश्वर ने इंसान को पाप और बुराई करने के लिये नहीं बनाया था। पर उसने आरम्भ में मनुष्य को अपने ही समान पवित्र और खरा बनाया था। पर आज जब परमेश्वर अपने ही बनाए हुए इंसान को पाप और

बुराई करते देखता है, तो उसे न केवल घृणा आती है, पर उसे बड़ा दुख भी होता है। और यह स्वाभाविक ही है, क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया है, मनुष्य परमेश्वर की संतान है। कौन माता-पिता अपने बच्चों के बुरे चाल-चलन से दुखी नहीं होते? और क्या वे नहीं चाहते कि वे अपने बुराई के मार्ग को छोड़कर सही रास्ते पर आ जाएं? ऐसे ही, परमेश्वर भी है। जब भी हम कोई बुराई करते हैं, गलत काम करते हैं तो उसे दुख होता है; पर जब हम अपना मन फिराकर उसके पास वापस आ जाते हैं तो उसे इस बात से प्रसन्नता होती है।

प्रभु यीशु ने इसी बात को समझाने के लिये एक बार शिक्षा देकर इस प्रकार कहा था, कि किसी व्यक्ति के दो पुत्र थे, और उनमें से एक अपने पिता को छोड़कर किसी दूर देश में जाकर रहने लगा था। वहां उसने अपना सब कुछ, जो वह अपने पिता के घर से अपने साथ लाया था, बुरे कामों में उड़ा दिया। और कुछ ही दिनों में वह कंगाल हो गया। उसके सब दोस्त भी उसे छोड़कर चले गए। और वह एक बड़ा ही गंदा और पशु सरीखा जीवन व्यतीत करने लगा। पर जब वह अपने आपे में आया, तो वह अपने पिता और अपने घर के बारे में सोचने लगा। वह सोचने लगा, कि उसका पिता और उसका घर कितना अच्छा है; और उसके घर में उसके नौकर भी ऐश-ओ-आराम से रहते हैं। उसे अपनी करनी पर बड़ा पछताव आया। और वह मन-ही-मन कहने लगा कि ''मैंने अपने पिता की बात न मानकर बड़ी ही भारी गलती की है।'' सो उसने उसी समय निश्चय किया, कि मैं अब इस गंदे जीवन को छोड़कर अपने पिता के पास वापस जाऊंगा। और अपने पिता से अपनी सब गलतियों के लिये माफी मांगूगा; और अपने पिता से निवेदन करके कहूंगा, कि मुझे अपने घर में एक नौकर की ही तरह रख ले। सो वह उसी समय अपने घर वापस जाने के लिये चल पड़ा। पर अभी जब वह दूर ही था, कि उसके पिता ने उसे वापस आते देख लिया, सो उसने दौड़कर अपने पुत्र को अपने गले से लगा लिया और उसे बहुत-चूमा, और अपने नौकरों से कहा कि घर में एक बहुत बड़ा जश्न मानने की तैयारी करो, अच्छे से अच्छा खाना बनाओ, घर को अच्छी तरह से सजाओ और सब को बुलाओ ताकि हम सब मिलकर खुशी मनाएं, क्योंकि मेरा खोया हुआ पुत्र वापस आ गया है। और प्रभु यीशु ने कहा, ऐसे ही स्वर्ग में भी परमेश्वर और उसके सब दूत मिलकर खुशी मनाते हैं, जब कोई भी मनुष्य बुराई से अपना मन फिराकर परमेश्वर के पास वापस आता है।

मनुष्य की आत्मा का मूल्य वास्तव में केवल परमेश्वर ही जानता है। इसलिये, प्रभु यीशु ने कहा था, कि यदि मनुष्य सारे जगत को भी प्राप्त कर ले पर अन्त में अपनी आत्मा को खो दे तो उसे क्या लाभ होगा? केवल पाप मनुष्य की आत्मा को नरक में ले जाता है। लेकिन परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने जगत के पापों का प्रायश्चित करने के लिये अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास लाए वह नाश न हो पर स्वर्ग में अनन्त जीवन पाए। परमेश्वर हमें हमारे पापों के दण्ड से बचाना चाहता है। पाप का दण्ड है मृत्यु, हमेशा की मृत्यु;

अर्थात् हमेशा के लिये परमेश्वर से अलग होकर नरक में रहना। इसलिये परमेश्वर ने जगत के पापों का प्रायश्चित करने के लिये एक ऐसा विशाल बलिदान दिया है। ताकि उसके पुत्र यीशु मसीह में विश्वास लाकर, और हर एक बुराई से अपना मन फिराकर और जल में अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेकर, प्रत्येक जन अपने पाप के दण्ड से बच जाए, और स्वर्ग में हमेशा का जीवन पाने के लिये तैयार हो जाए।

आज पृथ्वी पर हर एक इंसान के लिये यह जरूरी हो गया है, कि वह उस खोए हुए पुत्र की तरह अपने आपे में आए, और प्रत्येक बुराई से अपना मन फिराकर परमेश्वर के पास वापस लौट आए। बाइबल में लिखा है, कि सबने पाप किया है और सब परमेश्वर से दूर है (रोमियों 3:23; यशायाह 59:1, 2)। इसलिये सब को अपना मन फिराकर परमेश्वर के पास आने की आवश्यकता है। और सब को अपने पापों से उद्धार पाने के लिये परमेश्वर की आज्ञा को मानने की आवश्यकता है।

और मेरी आशा है, कि आप इस बात पर अवश्य ही ध्यान देंगे।

मसीह में

जे. सी. चोट

बाइबल बताती है कि जन्म के समय हम बिना पाप के होते हैं। तब हम शुद्ध, अबोध और सुरक्षित होते हैं। पौलुस ने कहा कि बड़ा होने पर, जवाबदेही की उम्र तक पहुँचने पर जब हमें सही और गलत की पहचान हो जाती है, तो हम पापी बन जाते हैं (रोमियों 3:23), और हमें परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए परिवर्तित होकर छोटे बच्चों के जैसे बनना आवश्यक होता है (मत्ती 18:3)।

हमें, जो कि पापी हैं, उद्धार की आवश्यकता है, क्योंकि हम परमेश्वर की व्यवस्था को तोड़ने वाले बन गए हैं (देखें 1 यूहन्ना 3:4)। पौलुस हमें याद दिलाता है कि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह में अनन्त जीवन है। (रोमियों 6:23)।

परन्तु हम पाप और मृत्यु से कैसे बच सकते हैं? क्षमा पाकर, छुड़ाए जाकर उद्धार पाए हुए की स्थिति में हमें कैसे बदला जा सकता हैं? मसीह कहता है कि यदि हम विश्वास करें और बपतिस्मा लें तो वह हमारा उद्धार करेगा (मरकुस 16:16)। जब पतरस ने लोगों की बड़ी भीड़ को वचन सुनाया और लोग विश्वासी बन गए थे और उन्होंने जानना चाहा था कि वे और क्या करें, तो उसने उन्हें बताया था कि मन फिराएं और अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लें (प्रेरितों

2:38)। हमें बताया गया है कि जो उद्धार पाते थे, उन्हें प्रभु प्रतिदिन कलीसिया में मिला लेता था।

प्रभु के आरंभिक आज्ञापालन का हमारा अंतिम कदम बपतिस्मा, हमें संसार में से निकालकर मसीह में उसकी कलीसिया में ले आता है। अकेला बपतिस्मा अपने आप में बेशक कुछ नहीं है, और हमारे लिए तब तक कुछ नहीं करेगा जब तक वह यह अपने पापों से मुड़कर परमेश्वर और समीह में विश्वास के द्वारा न हो। जो कि मन फिराने, परमेश्वर के पुत्र के रूप में मसीह में अपने विश्वास का अंगीकार करने से होता है। उसके बाद बपतिस्मा लेने पर प्रभु के निर्देशों को मानते हुए अपने पापों को धो डालते हुए पानी में दफनाए जाना आवश्यक है। हमें बताया गया है कि बपतिस्मा बचाता है (1 पतरस 3:21)। हमें पानी बचाता नहीं, बल्कि मसीह बचाता है। क्योंकि हमने उसकी इच्छा के अनुसार बपतिस्मा लिया है। जैसा कि 1 पतरस 3:21 में पतरस ने कहा कि बपतिस्मा शरीर के मैल को धोने या नहाने के लिए नहीं है, बल्कि यह तो शुद्ध विवेक से परमेश्वर के सामने झुक जाने के लिए है।

फिर सवाल उठता है कि जब तक कोई ऐसा काम न करे जो परमेश्वर ने उसे करने को कहा हो, तब तक परमेश्वर के साथ उसका विवेक शुद्ध कैसे हो सकता है? बेशक ऐसा नामुमकिन है, इसलिए आवश्यक है कि पश्चात्तापी विश्वासी ही बपतिस्मा ले।

इसे कहने का एक और ढंग इस प्रकार से कहना है कि जब कोई वचन के अनुसार बपतिस्मा लेता है यानी पानी में दफनाएं जाकर नये जीवन की चाल चलने के लिए पानी में से बाहर आता है तो उसे आत्मिक रूप में नया जीवन पाने के कारण जल और आत्मा से नया जन्म मिलता है (यूहन्ना 3:3-5)। पौलुस इसे इस प्रकार कहता है, सो यदि कोई मसीह में हैं तो यह नई सृष्टि है, पुरानी बातें बीत गई हैं, देखों, वे सब नई हो गई (2 कुरिन्थियों 5:17)।

उद्धार पाने और नई सृष्टि बनने के लिए, मसीह में होना आवश्यक है, और मसीह में प्रवेश का एक ही तरीका है। प्रेरित पौलुस ने कहा, क्या तुम नहीं जानते कि हम सब जिन्होंने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया। अत: उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें (रोमियों 6:3, 4)।

2 कुरिन्थियों 5:17 में पौलुस इसी बात को कह रहा था कि जीवन का नयापन मसीह में नई सृष्टि या नये लोग बनने से आता है। फिर पौलुस ने कहा, क्योंकि तुम सब उस विश्वास के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की संतान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है (गलातियों 3:26, 27)। उदाहरण के लिए जब कोई व्यक्ति कोट को पहनता है तो वह कोट के अन्दर होता है या कोट के बाहर? बेशक वह कोट के अन्दर ही होता है। इसी प्रकार से जब कोई पहले बपतिस्मा लेता है तो इसका अर्थ है कि वह

मसीह में है न कि मसीह के बाहर। इसका यह भी अर्थ है कि मसीह में हम परमेश्वर की संतान है।

जो लोग यह कहते हैं कि उनका उद्धार पहले हुआ और बाद में उन्होंने बपतिस्मा लिया था, वे यह कह रहे हैं कि उनका उद्धार मसीह के बाहर या मसीह के बिना हुआ है। ऐसा कैसे हो सकता है? यदि वचन यह बताता है कि उद्धार पाने के लिए मसीह में होना आवश्यक है, और मसीह में हमें बपतिस्मा ही लाता है, तो इसका अर्थ यह हुआ कि बपतिस्मा से पहले उद्धार होना आवश्यक है।

फिर से, 1 कुरिन्थियों 12:13 में पौलुस बताता है कि हमारा बपतिस्मा एक ही देह में हुआ और कुलुस्सियों 1:18 कहता है कि वह देह कलीसिया है। इफिसियों 1:22, 23 में वह दिखाता है कि कलीसिया की देह है और अंत में 4:4 में वह बताता है कि कि वह देह केवल एक ही है।

परन्तु यदि वह एक ही देह, कलीसिया है तो इसका अर्थ यह हुआ कि कलीसिया केवल एक ही है, और यदि हमारा बपतिस्मा उस देह या कलीसिया में हुआ है, तो कलीसिया में प्रवेश का एक ही तरीका है, बपतिस्मा लेना। यह पूरी तरह से तर्कसंगत है।

सब बातों को मिलाने, हम जल और आत्मा से बपतिस्मा लेकर प्रभु की आज्ञा मानने पर मसीह में और उसकी कलीसिया में प्रवेश करते हैं और उसी समय मसीह हमें अपनी कलीसिया में मिला लेता है।

शारीरिक रिश्ते में, यानी जब हमारा शारीरिक परिवार में जन्म होता है, तो हम इमेशा के लिए उस परिवार के मेंबर बन जाते हैं। हमें वापस नहीं किया जा सकता। हम चाहें तो अपने परिवार के वफादार और निष्ठावान सदस्य के रूप में रहकर उस परिवार के लाभ प्राप्त कर सकते हैं या चाहें तो इस प्रकार से जीवन जी सकते हैं जिससे हमें उस परिवार के सभी लाभ मिलें या चाहें तो ऐसा जीवन जी सकते हैं जिससे हमें उस परिवार की सम्पत्ति से वंचित होना पड़े। परन्तु रहेंगे हम अपने माता-पिता के बच्चे ही।

यही बात आत्मिक रूप में सच है। जब हम मसीह में और उसकी कलीसिया या परिवार में दाखिल होते हैं तो हम मसीह में ही रहेंगे और उसके एक परिवार के सदस्य ही रहेंगे, परन्तु हम चाहें तो विश्वासी बने रहें चाहें तो अविश्वासी हो जाएं। परमेश्वर के बालक के रूप में मरने तक विश्वासी रहने वालों को प्रभु ने जीवन का मुकुट देने का वचन दिया है (प्रकाशितवाक्य 2:10)। यदि हम अविश्वासी हो जाएं तो परिवार की स्थानीय मण्डली हम से संगति तोड़ सकती है, जिससे हमारे मन न फिराने पर हम सदा के लिए नाश हो सकते हैं (मत्ती 25:46)। यदि हम अपने पापों से मन फिरा लें और अपने प्रभु के पास लौट आएं तो हमें क्षमा किया जाएगा जिससे हम उन लाभों को फिर से प्राप्त कर सकें जो उन लोगों को दिए जाते हैं, जो प्रभु के हैं। इस आत्मिक पारिवारिक सम्बंध को बेहतर ढंग से समझने के लिए लूका 15 में दी गई उड़ाऊ पुत्र की कहानी को पढ़ें। क्या आप

मसीह में हैं? क्या आप उसकी कलीसिया के सदस्य हैं? क्या आप परमेश्वर के विश्वासी बालक हैं यदि नहीं तो यह दुखद सच्चाई है परन्तु आप बचाए हुए हैं। इससे पहले कि बहुत देर हो जाए, प्रभु के निमंत्रण को सुनकर उसके पास लौट आएं।

सबसे बड़ा सलाहकार

ग्लेन कोली

मेरा मन यह मानने को तैयार नहीं होता कि हमारे वैवाहिक जीवन में समस्याएं हैं। इतने सालों तक सब कुछ ठीक-ठाक था... परन्तु अब नहीं है। कुछ देर पहले की ही तो बात है जब हमारी किसी बात पर असहमति हुई थी। हमारे बीच में झगड़ा हुआ जो बढ़ता ही गया। अगले दिन सब कुछ ठीक नहीं था। अब समय हाथ से निकल चुका है और हमारे बीच एक दीवार बन चुकी है जिसे हम गिरा नहीं सकते। हमने इस पर अफसोस किया है (कई बार) और इसे भुलाने की कोशिश भी की है पर यह हमारे बीच में आ ही जाती है। शायद हमें किसी से इस संबंध में बात करनी चाहिए।

क्या आपने कभी इन या ऐसी भावनाओं को जताया है? बहुतों ने जताया है। परन्तु अच्छी बात यह है कि सब विवाहित लोगों की समस्याएं इतनी नहीं बिगड़ती कि उन्हें तलाक के लिए अदालत तक जाना पड़े।

एक दिन अगर आपको यह ध्यान आता है कि आपके विवाह के लिए किसी की सहायता की आवश्यकता है तो आप किसके पास और कहां जाएंगे? क्या आप किसी बाहरी व्यक्ति के सामने अपनी समस्याओं को बताने से झिझकते हैं? आपके लिए अच्छी खबर है, विवाह का सबसे बड़ा और बढ़िया सलाहकार आपको कहीं भी मिल सकता है। वह भी मुफ्त में। आपको बेशकीमती सलाह का नमूना यह रहा-

आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं। इस कारण पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक ही तन बने रहेंगे।

पति पत्नी का सिर है। हे पतियो अपनी-अपनी पत्नियों से प्रेम रखो... पति अपनी-अपनी पत्नियों से अपनी देह के समान प्रेम रखे। जो अपनी पत्नी से प्रेम रखता है वह अपने आप से प्रेम रखता है। पर तुम में से हर एक अपनी पत्नी से अपने समान प्रेम रखे और पत्नी भी अपने पति का भय माने।

हे पत्नियो! तुम भी अपने पति के अधीन रहो। इसलिये कि यदि इन में से कोई ऐसे हो जो वचन को न मानते हों, तोभी तुम्हारे भय सहित पवित्र चाल-चलन को देखकर बिना वचन के अपनी-अपनी पत्नी के चालचलन के द्वारा खिंच जाएं। तुम्हाराशृंगार दिखावटी न हो, वरन तुम्हारा छिपा हुआ और गुप्त मनुष्यत्व, नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी सजावट से सुसज्जित रहें, क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में इसका मूल्य बड़ा है।

वैसे ही है पतियो, तुम भी बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो और स्त्री को निर्बल पात्र जानकर उसका आदर करो, यह समझकर कि हम दोनों जीवन के वरदान के वारिस हैं, जिससे तुम्हारी प्रार्थनाएं रूक न जाएं।

अत: सब के सब एक मन और कृपामय और भाईचारे की प्रीति रखने वाले, और करूणामय, और नम्र बने। बुराई के बदले बुराई मत करो और न गाली के बदले गाली दो, पर इसके विपरीत आशीष ही दो।

यदि आप हैरान है कि यह कौन कहता है तो उत्पत्ति 2, इफिसियों 5 और 1 पतरस 3 में यह परमेश्वर कहता है। कहने का तात्पर्य यह है कि जीवन की ऐसी समस्या नहीं है जिसका उत्तर बाइबल में न हो।

इसका अध्ययन करें। परमेश्वर का वचन आपकी सहायता करेगा।

उपासना

जोएल स्टीफ़न विलियम्स

कलीसिया का कर्त्तव्य न केवल स्वयं अपने और संसार के प्रति ही है, परन्तु उपासना के द्वारा परमेश्वर के प्रति भी है। उपासना का अर्थ क्या है? जो कुछ भी हम परमेश्वर की सेवा में प्रति-दिन करते हैं वोह उसकी सेवा है (रोमियों 12:1,2)। अर्थात, हमारा सम्पूर्ण जीवन ही परमेश्वर की उपासना और सेवा में लौलीन रहना चाहिए। (कुलुस्सियों 3:17)। केवल एक या दो घन्टे प्रत्येक सप्ताह में परमेश्वर की आराधना में देकर ही हमें सन्तुष्ट नहीं हो जाना चाहिए। परन्तु हर एक दिन और सदा जो कुछ भी हम करें वोह परमेश्वर की महिमा के लिये ही करें परन्तु, फिर भी, बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग सप्ताह में एक दिन एक स्थान पर एकत्रित होकर, कलीसिया के रूप में उसकी आराधना करें। उपासना करने का अर्थ है, "आदर, सम्मान, स्तुति और भक्ति करना।" सर्वशक्तिमान तथा सच्चे परमेश्वर की महिमा करना, उसके गुणगान करना। (मत्ती 2:2, 8,11; 4:9,10; यूहन्ना 4:23-24; 1 कुरिन्थियों 14:25; प्रकाशित, 4:10; 5:14)। परमेश्वर की आराधना करके हम उसे महिमान्वित करते हैं। सर्वशक्तिमान परमेश्वर के सिंहासन के सामने आकर उसकी उपासना करना महान बात है। (प्रकाशित. 4:1-5:14; यशायाह 6:1-5; 56:7; मत्ती 21:13)। किन्तु ऐसा नहीं समझ लेना चाहिए कि परमेश्वर एक स्वार्थी मनुष्य के समान है, जो हम मनुष्यों से अपनी प्रशंसा करवाना चाहता है। (प्रेरितों 17:24-25; भजन 50:10-12)। वास्तव में परमेश्वर की आराधना करना स्वयं हमारे लिये ही भला है, क्योंकि उपासना के द्वारा हम परमेश्वर के समीप आते हैं। वोह हमारा सृष्टिकर्त्ता और आत्मिक पिता है, और यह हमारा कर्त्तव्य है कि हम उसका आदर, सम्मान और उसकी प्रशंसा करें। उसे हमारी आवश्यकता नहीं है, परन्तु हमें उसकी आवश्यकता है।

परमेश्वर क्योंकि सर्वव्यापी है, इसलिये उसकी आराधना कहीं भी की जा सकती है। परमेश्वर की आराधना करने के लिये किसी विशेष स्थान की आवश्यकता नहीं है।

(यूहन्ना 4:19-24)। आराधना किसी के घर में की जा सकती है, या किसी खुले स्थान पर या किसी भवन में की जा सकती है। (रोमियों 16:5; 1 कुरिन्थियों 16:19; कुलुस्सियों 4:15; प्रेरितों 2:46; 5:42; 16:13; 20:7-8)। मसीही आराधना के लिये किसी भी प्रकार के ऊपरी दिखावे की आवश्यकता नहीं होती, पर उपासना इनसान के भीतर से होनी चाहिए। एक पवित्र जीवन और सच्चे मन से की गई उपासना से परमेश्वर प्रसन्न होता है। (भजन 15:1-5; 24:3-4 मत्ती 5:8)। परमेश्वर आत्मा है, और इसलिये उसकी उपासना भी आत्मा से की जानी चाहिए। जैसे कि यीशु ने कहा था, कि, "परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी आराधना करनेवाले आत्मा और सच्चाई से उसकी आराधना करें।"(यूहन्ना 4:24)। यदि आप मसीही हैं, और आपके आस-पास मसीह की कलीसिया कहीं पर भी नहीं है, तो आप स्वयं अपने ही घर में परमेश्वर की आराधना कर सकते हैं। अपने परिवार के लोगों को और अपने मित्रों को प्रभु का सुसमाचार सुनाएं ताकि वे भी प्रभु में विश्वास लाकर और उसकी आज्ञा मानकर मसीही बनें ताकि मसीह की कलीसिया वहाँ पर जहाँ आप है, स्थापित हो सके।

आरम्भ में मसीही लोग आराधना करने के लिये सप्ताह के पहले दिन, अर्थात, रविवार के दिन आराधना करने के लिये एकत्रित होते थे। (प्रेरितों 20:5-7; 1 कुरिन्थियों 16:1-2)। यहूदी लोग सप्ताह के सातवें दिन अर्थात शनिवार के दिन आराधना करते थे। परन्तु मसीही लोग सप्ताह के पहले दिन इसलिये आराधना करते हैं क्योंकि यीशु मसीह सप्ताह के पहले दिन, अर्थात रविवार के दिन मुर्दों मे से जी उठा था, और इस कारण से रविवार का दिन प्रभु का दिन कहलाने लगा था। (प्रकाशित. 1:10; मत्ती 28:1; मरकुस 16:1,2)। किन्तु जबकि मसीही लोग रविवार के दिन परमेश्वर की आराधना करने के लिए एक निश्चित स्थान पर एकत्रित होते हैं, इसका अर्थ यह नहीं है कि वे सप्ताह के किसी अन्य दिन में परमेश्वर के वचन में से अध्ययन करने के लिये और प्रार्थना करने के लिये और भजन गाने के लिये इकट्ठा नहीं हो सकते। (मत्ती 6:6)। कई स्थानों पर ऐसा होता है जहाँ मसीही लोग आपस में संगति करने के लिये और परमेश्वर की स्तुति करने के लिये किसी भी दिन, किसी मसीही जन के घर में या किसी अन्य स्थान पर एकत्रित होते हैं। (प्रेरितों 2:46; 5:42)। इस प्रकार से इकट्ठे होकर परमेश्वर की स्तुति करना बड़ी ही अच्छी बात है। पर मसीही लोगों के लिये सप्ताह के पहले दिन परमेश्वर की आराधना करने के लिए एक निश्चित स्थान पर एकत्रित होकर उपासना करना परमेश्वर की आज्ञा है। (इब्रानियों 10:25)। इस प्रकार एकत्रित होकर मसीही लोग न केवल परमेश्वर की आराधना ही करते हैं, पर आपसी संगति और प्रोत्साह का भी अनुभव करते हैं।

मसीही लोग आराधना के लिये एकत्रित होकर परमेश्वर को सम्मानित और महिमान्वित करते हैं; उसके प्रति अपने धन्यवाद प्रकट करते हैं। और इसी के साथ एक-दूसरे को मसीही जीवन में आगे बढ़ने के लिये प्रोत्साहित भी करते हैं। (1 तीमुथियुस 4:13; 1 कुरिन्थियों 14:19,26)। मसीही लोग आराधना में गीत गाते

हैं। कुछ गीत ऐसे होते हैं जिन्हें परमेश्वर की प्रशंसा में गाया जाता है, और कुछ एक-दूसरे के आत्मिक-उत्थान के लिये गाए जाते हैं। (इफिसियों 5:19-20; कुलुस्सियों 3:16; प्रेरितों 16:25; 1 कुरिन्थियों 14:15)। ऐसे ही, परमेश्वर के वचन की पुस्तक बाइबल में से पढ़ा और समझा जाता है। (प्रकाशित: 1:3; 1 तीमुथियुस 4:13; 1 थिस्सलुनीकियों 5:27)। बाइबल में से पढ़कर उपदेश दिया जाता है, और बताया जाता है कि हमसे परमेश्वर क्या चाहता है। (1 तीमुथियुस 4:13-16; 5:17; 2 तीमुथियुस 2:1-2; 3:10,16; प्रेरितों 20:20-21 याकूब 3:1)। इस प्रकार से बार-बार एकत्रित होने से मसीही लोगों को आत्मिक बल मिलता है, और आत्मिक जीवन में आगे बढ़ने के लिये प्रोत्साहन मिलता है। (रोमियों 12:3-8, 15; 16:16; 1 कुरिन्थियों 16:20; 1 यूहन्ना 1:3-4)।

कलीसिया की सभा में जो चंदा इकट्ठा किया जाता है और उसे कलीसिया के काम के लिये इस्तेमाल किया जाता है, अर्थात आवश्यकता से पीड़ित किसी की सहायता के लिये या प्रचार के कार्य आदि के लिये। (रोमियों 12:13; 15:25-27; 1 कुरिन्थियों 9: 1-14; 2 कुरिन्थियों 8:1-9,15; इब्रानियों 13:1-3; 1 तीमुथियुस 5:3-18; याकूब 1:27)। मसीही लोग अपनी आमदनी में से प्रभु के कार्य के लिये सप्ताह के पहले दिन यानी रविवार के दिन बाइबल में लिखी आज्ञा के अनुसार अपना चंदा देते हैं। (1 कुरिन्थियों 16:2)। ऐसा करके वे अपनी एकता और संगति का भी प्रदर्शन करते हैं। (2 कुरिन्थियों 8:4; 9:13; रोमियों 15:26; इब्रानियों 13:16)। यहूदी लोग अपनी आमदनी का दसवां हिस्सा दिया करते थे। ऐसा करने को उनसे कहा गया था। लेकिन मसीही लोगों को बाइबल के नए नियम में सिखाया गया है, कि वे अपनी-अपनी आमदनी के अनुसार अपनी इच्छा से दें। (1 कुरिन्थियों 16:1,2)।

मसीही आराधना में प्रार्थना करने का स्थान भी प्रमुख है। मसीही यह विश्वास करते हैं कि महान परमेश्वर है और वोह अपने लोगों की प्रार्थनाओं को सुनता है। परमेश्वर से जो कुछ भी हम माँगते हैं वोह सब हमें नहीं मिलता। किन्तु जो हमारे लिये उचित और आवश्यक है वोह हमें परमेश्वर देता है। (रोमियों 8:28)। हमें नियमित ढंग से परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। (1 थिस्सलुनीकियों 5:17; रोमियों 12:12; कुलुस्सियों 4:2; लूका 18:1)। किन्तु कुछ बातें ऐसी हैं जिनसे हमें दूर रहना चाहिए क्योंकि वे प्रार्थना में रुकावट बन सकती हैं, जैसे कि घर में कलेश-झगड़ा (1 पतरस 3:7), मन में किसी के प्रति बैर रखना (मत्ती 6:14,15; इफिसियों 4:32) गलत विचार तथा व्यवहार रखना (भजन. 66:18; यशायाह 1:15), किसी की बुराई करना (1 पतरस 3:12), और परमेश्वर पर दृढ़ विश्वास न रखना (याकूब 1:6-8)। दूसरी ओर, कुछ बातें ऐसी हैं जो प्रार्थना में सहायक बन सकती हैं, जैसे कि एक अच्छा चरित्र (भजन. 24:3-4), प्रभु की आज्ञाओं पर चलना (1 यूहन्ना 3:21-22), परमेश्वर का आदर करना (मत्ती 6:9), विश्वास के साथ प्रार्थना करना (मत्ती 21:22; मरकुस 11:24), सच्चाई की प्रतीति करना (मत्ती 6:5,6; भजन. 17:1), और धन्यवादी बने रहना (कुलुस्सियों 4:2; फिलिप्पियों 4:6)। प्रभु यीशु स्वयं प्रार्थना

के विषय में हमारे लिये एक अच्छा उदाहरण है (यूहन्ना 17:1-26; मत्ती 14:23; 26:36; लूका 5:16; 6:12; 9:28), प्रार्थना के बारे में यीशु ने अनेक बार सिखाया था (लूका 11:11; 5-13; 18:1-8), और प्रेरितों ने भी इस बारे में शिक्षा दी थी (1 थिस्सलुनिकियों 5:16-25; 1 तीमुथियुस 2:1-8; याकूब 5:13-18)। एक बार यीशु के चेलों ने प्रभु से आग्रह करके कहा था कि वोह उन्हें प्रार्थना करना सिखाए, और प्रभु ने उन्हें एक ऐसी उदाहरणात्मक प्रार्थना सिखाई थी जिसमें प्रार्थना करने की सभी विशेष आवश्यक बातें मौजूद थीं। प्रभु ने उनसे कहा था, तुम इस रीति से प्रार्थना किया करो:

> हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है, तेरा नाम पवित्र माना जाए। तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो। हमारी दिन-भर की रोटी आज हमें दे। और जिस प्रकार हमने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर। और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा। (मत्ती 6:9-13; लूका 11:1-4)।

हर एक सप्ताह के पहले दिन एकत्रित होकर मसीही जन प्रभु-भोज में भी भाग लेते हैं। प्रभु यीशु को स्मरण करने के लिये प्रभु-भोज लिया जाता है। प्रभु-भोज की स्थापना प्रभु ने अपनी मृत्यु से पहले की थी। (मत्ती 26:17-30; मरकुस 14:22-24; लूका 22:14-23; 1 कुरिन्थियों 11:23-26)। प्रभु ने कहा था: "मेरे स्मरण के लिये यही किया करो।" (1 कुरिन्थियों 11:24-25)। प्रभु-भोज में भाग लेने के द्वारा मसीही लोग यीशु की मृत्यु और जी उठने को याद करते हैं (1 कुरिन्थियों 11:24-26)। प्रभु-भोज का उद्देश्य भोजन करने से नहीं है (1 कुरिन्थियों 11:34)। प्रभु-भोज लेते समय मनुष्य को प्रभु के बलिदान के बारे में सोचना चाहिए, और अपने आप को जाँचना चाहिए (1 कुरिन्थियों 11:27-28)। यह वोह समय होता है जिसमें मसीहीगण प्रभु में अपनी एकता को व्यक्त करते हैं। (1कुरिन्थियों 10:16-17; 11:29-33)। प्रभु-भोज में रोटी में से खाकर मसीह की देह को स्मरण किया जाता है, और अंगूर के रस में से पीकर यीशु के लहू को याद किया जाता है। अख़मीरी रोटी अर्थात, जिसमें ख़मीर न हो, क्योंकि ख़मीर पाप का प्रतीक है, प्रभु-भोज में इस्तेमाल की जानी चाहिए। प्रभु यीशु में कोई पाप या कलंक नहीं था, वोह एक निष्कलंक मेमने की तरह हमारें पापों के बदले में बलिदान हुआ था, इसलिये अख़मीरी रोटी उसकी देह की याद में ली जाती है। (1 कुरिन्थियों 5:7; मरकुस 14:1) प्रभु-भोज लेने के द्वारा हम प्रभु में अपने विश्वास को दृढ़ करते हैं। (1 कुरिन्थियों 11:27-32)। इसी प्रकार से अंगूर का रस पीकर हम यीशु के लहू को स्मरण करते हैं, वोह लहू जो उसने हमारे पापों की छुड़ौती के लिये बहाया था। हर एक इतवार अर्थात प्रभु के दिन मसीही लोगों के लिये एकत्रित होकर प्रभु-भोज में भाग लेना बड़ा ही आवश्यक है। (1 कुरिन्थियों 10:16-17), क्योंकि प्रभु-भोज उन्हें याद दिलाता है कि उनके लिये एक बलिदान दिया गया था और उनका एक ज़िन्दा मुक्तिदाना है। (1 कुरिन्थियों 11:26)। आरम्भ से ही मसीह की कलीसिया ऐसा ही करती आई है (प्रेरितों

20:5-7; 1 कुरिन्थियों 16:1,2)।

कुछ लोग प्रभु-भोज को ''मास'' कहकर सम्बोधित करते हैं, और वे ऐसा मानते हैं कि जब वे ''मास'' अर्थात, प्रभु-भोज लेते हैं तो रोटी और शीरा वास्तव में प्रभु यीशु की देह और लहू में परिवर्तित हो जाते हैं, और इस प्रकार यीशु का बलिदान फिर से हो जाता है। परन्तु बाइबल हमें ऐसा बिल्कुल नहीं सिखाती। बाइबल के अनुसार यीशु का बलिदान केवल एक ही बार हमेशा के लिये दिया गया था। (इब्रानियों 7:27; 9:12,24-28; 10:10-14; रोमियों 6:9)। यीशु को बार-बार बलिदान होने की आवश्यकता नहीं है। प्रभु-भोज की स्थापना के समय जब यीशु ने रोटी को लेकर अपने चेलों से कहा था, ''लो, खाओ, यह मेरी देह है,'' और शीरे के विषय में कहा था, ''तुम सब इसमें से पियो, क्योंकि यह वाचा का मेरा वोह लहू है, जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है,'' (मत्ती 26:26-28), तो यीशु ने अपनी देह और अपने लहू का उदाहरण दिया था। वोह उन्हें अपनी देह और अपना लहू वास्तव में नहीं दे रहा था, क्योंकि उस समय तो वोह स्वयं उनके सामने ज़िन्दा खड़ा था। यीशु के अनेक उदाहरणों में से यह भी एक उदाहरण था (यूहन्ना 10:7,14;15:5; मत्ती 5:13-14)। जब मसीही लोग एकत्रित होकर परमेश्वर की आराधना करते हैं तो वे विश्वास रखते हैं कि प्रभु उनके साथ है। (मत्ती 18:20)। क्योंकि हमारा मुक्तिदाता मरने के बाद फिर जी उठा था। वोह ज़िन्दा है, और प्रभु-भोज उसके लोगों को उसके बलिदान की निरन्तर याद दिलाता है।

आराधना करने के विषय में नए नियम में यह तो बताया गया है कि आज हमें परमेश्वर की उपासना किस प्रकार से करनी चाहिए, किन्तु क्या पहले करना चाहिए और क्या बाद में, ऐसी कोई विधि नहीं बताई गई है। पुरुषों को आराधना में अगुवाई करनी चाहिए, जैसे कि उन्हें अपने घरों में और कलीसियाओं में भी करना चाहिए। (उत्पत्ति 1:26-27; 2:18; 3:16; 4:7; 1 कुरिन्थियों 11:2-16; 14:33-36; गलतियों 3:28; इफिसियों 5:21-33; कुलुस्सियों 3:18-19; 1 तीमुथियुस 2:1-15; 3:1-13; 1 पतरस 3:1-7)। आराधना शुद्ध मन से, व्यवस्थित रूप से, तथा सच्चाई के साथ की जानी चाहिए। (यूहन्ना 4:24; 1 कुरिन्थियों 14:40)। सच्ची और सही उपासना करने का एक नमूना इस प्रकार हो सकता है: सप्ताह के पहले दिन सभी मसीहीजन एक जगह एकत्रित होकर प्रार्थना के साथ आरम्भ करें। आत्मिक गीत गाएँ, और एक या दो भाई प्रार्थना में अगुवाई करें। कोई भाई बाइबल में से पढ़ सकता है। और यदि कोई उपदेश दे सकता है, तो बाइबल में से जो पढ़ा गया है उसे समझाए। फिर, प्रभु-भोज में भाग लें। कुछ और गीत या भजन गाए जा सकते हैं और प्रार्थनाएँ की जा सकती हैं। चन्दा इकट्ठा किया जाए जो किसी अच्छे काम के लिये, सहायता करने के लिये, या कलीसिया के काम के लिये इस्तेमाल में लाया जाए। इसके बाद, यदि कोई सूचना हो, तो उसे कलीसिया को बताया जा सकता है, अर्थात यदि कोई कलीसिया में बीमार है, या कोई और सूचना। अन्त में प्रार्थना के साथ उपासना को समाप्त करें। आरम्भ में मसीही लोग इसी ढंग से आराधना करते थे।

आपने सुना होगा

जॉन स्टेसी

आपने अवश्य ही सुना होगा कि कहा जाता है कि बाइबल से कुछ भी प्रमाणित किया जा सकता है। क्या यह बात सच है?

वास्तव में ऐसा कहना, परमेश्वर की निंदा करना है। क्योंकि यदि यह बात सही है, तो फिर सच्चाई का स्थान क्या है? सच्चाई स्वयं अपना विरोध नहीं कर सकती। यीशु ने परमेश्वर से कहा था कि तेरा वचन सत्य है। (यूहन्ना 17:17)। इस गलत बात का मूलाधार आज की प्रचलित धार्मिक गलतियों और भ्रांतियों में पाया जाता है। कई बार लोग बाइबल में लिखी बातों को लेकर उन्हें इस प्रकार तोड़-मरोड़कर इस्तेमाल करते हैं जिससे वे अपनी गलत शिक्षाओं को बाइबल से प्रमाणित करना चाहते हैं। पतरस बाइबल में पौलुस द्वारा लिखी बातों को सम्बोधित करके एक जगह इस प्रकार कहता है, जिनमें कितनी बातें ऐसी हैं, जिनका समझना कठिन है, और अनपढ़ और चंचल लोग उनके अर्थों को भी पवित्रशास्त्र की और बातों की नाई खींच तानकर अपने ही नाश का कारण बनते हैं।

जब एक बात पर दो धार्मिक विचारों के लोग टकराते हैं और अलग-अलग शिक्षा देते हैं तो इसमें बाइबल का दोष नहीं होता है पर उन लोगों का होता है जो परमेश्वर के वचन की पुस्तक में लिखी हुई बातें तोड़ते मरोड़ते हैं। सो मनुष्यों की गलतियों के लिये परमेश्वर को दोषी मत ठहराएं। पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 14:33 में कहा था कि परमेश्वर गड़बड़ी का नहीं, परन्तु शन्ति का कर्ता है।, अर्थात आज जो विभिन्न धार्मिक विचार, शिक्षाएं और विश्वास संसार में पाए जाते हैं वे सब परमेश्वर की इच्छा से नहीं हैं इस गड़बड़ी को मनुष्यों ने जन्म दिया है।

सच्चाई यह है, कि परमेश्वर ने हमें केवल एक ही सच्ची शिक्षा दी है, वह साधारण और सरल है, उसके अतिरिक्त प्रत्येक बात गलत और निराधार है। पौलुस गलतियों 1:7-8 में कहता है, परन्तु वह दूसरा सुसमाचार है ही नहीं, पर बात यह है कि कितने ऐसे हैं जो तुम्हें घबरा देते और मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ना चाहते है। परन्तु यदि हम या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हम ने तुम्हें सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए तो श्रापित हो।

आज यदि हम परमेश्वर की सच्चाई पर ही चलना चाहते हैं तो हमें आज भी उसी शिक्षा को सिखाना और मानना चाहिए जिसे पहली शताब्दि में सिखाया और माना जाता था। पतरस की वह बात जिसका वर्णन हमें 2 पतरस 1:20 में मिलता है हमें अवश्य याद रखनी चाहिए, उसने कहा था, कि पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्यवाणी किसी के अपने ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती।

हमें बाइबल की शिक्षाओं को बाइबल में ही लिखी बातों से मिलाकर सीखना चाहिए। मनुष्यों की शिक्षाओं और धर्मोपदेशों से हमें परे रहना चाहिए। बाइबल स्वयं ज्ञान और भक्ति का भंडार है। यदि इन बातों को ध्यान में रखा जाए, तो हम कभी यह नहीं कहेंगे कि बाइबल से कुछ भी प्रमाणित किया जा सकता है।

विधर्म की समस्या

ऑवन डी. आल्ब्रट

कुलुस्सियों के पत्र में एक जोरदार संदेश है परन्तु कुलुस्से की कलीसिया में कौन सी समस्याएं खड़ी हुई थीं इस पर अनिश्चतता रहती हैं। क्या कलीसिया में कोई विशेष गलातियां आ गई थीं या पौलुस सामान्य अर्थ में झूठी शिक्षा की संभावना के विरूद्ध चेतावनी दे रहा था?

पौलुस के कहने का अर्थ था कि कुलुस्से की कलीसिया एक समर्पित और बढ़ने वाली मण्डली थी। इसके सदस्यों को उसने 'पवित्र' लोग और विश्वासी कहा (1:2)। मसीह में उनके विश्वास औरसब पवित्र लोगों के लिए उनके प्रेम की चर्चा दूर-दूर तक थी (1:4)। कुलुस्से के लोग फल ला रहे थे (1:6)। वे राज्य में थे (1:13), परमेश्वर से मिलाए जा रहे थे (1:22)। उन्हें बपतिस्मा दिया गया था (2:12) और मसीह के साथ जिलाए गए थे (2:13)। वे मसीह में छिपे हुए (3:3), चुने हुए और उनसे प्रेम किया गया (3:12), और वे एक देह में थे (3:15)। पौलुस ने यह संकेत नहीं दिया कि वे किसी प्रकार के दुराचार या डॉक्ट्रिन यानी शिक्षा से भटके हुए थे।

इपफ्रास ने पौलुस को कलीसिया की स्थिति के बारे में बताया था (1:7, 8)। सदस्यों की चाहे उसने अच्छी रिपोर्ट दी थी, शायद उसने उनकी सोच में समस्याएं भी देखी थीं। ये भाई हो सकता है कि अभी सच्चाई से दूर न गए हो परन्तु पौलुस कम से कम उन्हें भटकने से रोकने के लिए चेतावनी दे रहा था।

पत्र के एक छोटे भाग में पौलुस ने सुसमाचार से किसी भी प्रकार के भटकने के विरूद्ध चेतावनिया दी थी (2:4-23) और ये चेतावनियां चाहे विशेष रीतियों के विषय में थीं परन्तु पौलुस ने यह संकेत नहीं दिया कि किसी ने वहां ऐसी समस्याओं को बढ़ावा दिया था। यह जानते हुए कि उनकी संस्कृति उनके प्रति जोरदार आकर्षण रखती है, वह उन्हें मसीह में बने रहने के लिए प्रोत्साहित कर रहा हो सकता है।

(1) शायद पौलुस ने यह नॉस्टिक शिक्षाओं का उत्तर देने के लिए लिखा। कुछ समय तक नॉस्टिकवाद को विधर्म माना जाता था जिसकी पौलुस बात कर रहा था, परन्तु अधिकतर टीकाकारों द्वारा इस विचार को त्याग दिया गया है। नानॅस्टिकवाद दूसरी सदी तक पूरी तरह से विकसित नहीं हुआ। पीटर टून ने इस शिक्षा के प्रमुख पहलुओं को इस प्रकार वर्णन किया है–

सच्चा परमेश्वर शुद्ध आत्मा है और शुद्ध प्रकाश के क्षेत्र में वास करता है जो पूरी तरह से अंधकार भरे संसार से अलग है। संसार बुरा है, क्योंकि यह तत्व से बना है और तत्व बुरा है। सच्चे परमेश्वर का इससे कोई संबंध नहीं होगा, क्योंकि इसे किसी कम ईश्वर द्वारा रचा गया था और यह एक गलती थी। इस संसार के

लोग आमतौर पर देह और मन के बने होते हैं, परन्तु कुछ में ही विशुद्ध आत्मा की चिंगारी होती है। ऐसे 'आत्मिक' लोगों को इस बुरे संसार से बचने की आवश्यकता है, इस कारण उद्धारकर्त्ता की आवश्यकता है। यीशु जो कि विशुद्ध आत्मा है चाहे शरीर और मन से, परन्तु वह उद्धारकर्ता है जो सचचे परमेश्वर की ओर से ज्योति में है और ज्योति सच्चे परमेश्वर की ओर से ज्योति के आत्मिक क्षेत्र का ज्ञान लाने के लिए आता है। इसलिए जिनके अन्दर आत्मा की चिंगारी है वे ज्ञान को स्वीकार करके सच्चे परमेश्वर के साथ फिर से जुड़ जाएंगे।

नॉस्टिक लोगों का मानना था कि भौतिक संसार पूरी तरह से बुराई है और पूरी तरह से आत्मा के संसार से अलग है। इसके परिणाम में दो अलग-अलग विचार बनें, जिसमें फिलॉसफली का सिद्धान्त है जो तत्व को भलाई और आत्मिक का विरोधी नियम बताता है। इस फिलॉसफी के अनुसार परमेश्वर (जो पूर्णतया भला है) ने तत्व को (जो बुराई है) नहीं बनाया होगा। नॉस्टिकवाद ने यह प्रस्ताव दिया कि अन्य देवता जो नीचे की ओर घूमते हुए निकले थे और इनमें से किसी अध ीन देवता ने संसार की रचना की। अन्य आत्मिक जीवों के सहयोग से उसने भौतिक अस्तित्व में मनुष्यजाति की आत्माओं को कैद कर लिया होगा, जिससे लोग आत्मिक अस्तित्व में बचने की इच्छा करते हैं। हर कोई नहीं मानता था कि भौतिक अस्तित्व से निकलने के लिए आत्मिक चिंगारी का होना आवश्यक है। मृत्यु के समय केवल सच्चा ज्ञान होने वालों के लिए ही भौतिक को छोड़ आत्मिक अस्तित्व में कहीं जाने की बात कहीं जाती थी।

नॉस्टिक लोग यीशु की ऐतिहासिक मृत्यु, दफनाए जाने और जी उठने सहित उसके शारीरिक अस्तित्व का इनकार करते थे। उनकी सोच में था कि उद्धार का अर्थ पाप से उद्धार नहीं, बल्कि शारीरिक अस्तित्व से छुटकारा है।

(2) पौलुस संभवतया एसेनियों की शिक्षा की ही बात कर रहा था। कुलुस्सियों पर अपनी शानदार टीका में जे. डी. लाइफुट ने एक यहूदी सम्प्रदाय ऐसेनियों की शिक्षाओं के एक मामले की बात बताई जिसमें एक मुख्य विधर्म जो कुलुस्से की कलीसिया में आ गया था बताया गया। कुलुस्सियों और एसेनीवाद में समानताएं बताते हुए डोनल्ड गुथरी ने लिखा है, लाइटफुट की थ्योरी चाहे स्वीकार नहीं की जाती, परन्तु यह बिना इंकार किए कि यह विधर्म दूसरी शताब्दी के विकसित नॉस्टिकवाद के बजाय से एसेनीवाद से मेल खाता है।

(3) कुलुस्सियों को यीशु के संबंध में गलत शिक्षा दिए जाने पर परेशानी होती होगी। पौलुस ने यीशु की प्रकृति पर जोर दिया। न केवल वह परमेश्वर के स्वरूप पर है (1:15), बल्कि वह हर बात में सृष्टिकर्ता भी है (1:16, 17)। सब बातों में उसे प्राथमिकता दी गई है। वह कलीसिया के ऊपर सिर है और सारी परिपूर्णता उसी में है (1:18)। उसमें परमेश्वरत्व की सारी परिपूर्णता वास करती है (2:9)।

(4) कुछ मसीही लोग फिलॉसफी की ओर मुड़ गए हो सकते हैं (2:8)।

पौलुस ने कुलुस्सियों को विश्वास दिलाया कि उन्हें यीशु को छोड़ किसी और शिक्षा या सिखाने वाले की आवश्यकता नहीं है। उस में मसीही लोग पूर्ण होते हैं (2:10)।

(5) कुछ लोग यहूदी विचार से प्रभावित हुए हो सकते हैं। यदि ऐसा हुआ तो उन्होंने सोचा होगा कि क्षमा व्यवस्था को मानने के द्वारा मिली है। पौलुस की बात कि यीशु ने उन्हें पापों से छुड़ाया और व्यवस्था की विधियों को मिटा डाला (2:12-16)। यहूदी शिक्षा का उत्तर हो सकता है।

(6) कुछ यहूदी गुरुओं के प्रभाव में कुछ लोग स्वर्गदूतों की उपासना कर रहे हो सकते हैं (2:18)। एफ. एफ. ब्रूस ने स्वर्गदूतों के प्रति फ्रूगिया के क्षेत्र में यहूदियों के व्यवहार पर चर्चा की है–

परमेश्वर और मनुष्य के बीच संसार की तारें (स्वर्गदूतों) के हाथ में होती हैं इसलिए मनुष्य को परमेश्वर की ओर से मिला सारा प्रकाशन और मनुष्य की ओर से परमेश्वर के सामने की गई सारी प्रार्थना और आराधना अपने लक्ष्य तक तभी पहुंच सकती है यदि यह उनके माध्यम से और उनकी अनुमति से की जाए। इसलिए यह समझदारी की बात लगी कि उनकी साख का लाभ दिया जाए और जैसा वे चाहते हैं वैसा ही किया जाए।

इसके अलावा उन्हें लगा कि परमेश्वर ने व्यवस्था देने के लिए माध्यमों के रूप में स्वर्गदूतों का इस्तेमाल किया। इस कारण व्यवस्था को मानने का अर्थ उन्हें सम्मान देना होगा जबकि व्यवस्था को तोड़ने का अर्थ उन्हें नाराज करना होगा। इस शिक्षा के अनुसार व्यवस्था की आज्ञा मानकर और कठोर शारीरिक संयम के द्वारा स्वर्गदूतों को संतुष्ट किया जाए।

(7) कुछ लोगों ने जीवन के भौतिकवादी विचार को मान लिया हो सकता है। यदि उनका ढंग यह था तो पौलुस इसे संसार की आधी शिक्षा शब्द में बता रहा था (2:8)। कुछ लोग मूर्तियों की पूजा करने से बाहर निकले हैं (जिसमें सैक्स के संस्कार भी थे)। नैतिकता के सम्बंध में पूर्तिपूजा की फिलॉसकों कोई ठोस मानक नहीं देती थी जो सांसारिक से लड़ सके। 3:3-9 में पौलुस की चिंता का यह एक भाग हो सकता है।

(8) पौलुस ने संभवता समन्वयवाद के विषय में लिखा, यानी यहूदी रहस्यवाद, फिलॉसफी, मूर्तिपूजा के रहस्यमयी सम्प्रदायों के विभिन्न विश्वासों और धार्मिक शिक्षा का मेल। कलिन्टन ई. आरनॉल्ड ने निष्कर्ष निकाला कि समस्या यह थी;

कुलुस्सियों का पत्र विरोधी शिक्षा की धमकी के कारण लिखा गया जो प्रेरित को कलीसिया के स्वास्थ्य के लिए खतरनाक और मसीह की प्रतिष्ठा कम करने वाली लगी। यह समन्वयवादी फिलॉसफी कुलुस्सियों के लिए लुभाने वाली थी क्योंकि इस में रसातली (अपराधा लोक) आत्माओं, प्रेम (आकाशीय) स्वर्गीय (शक्तियों) और हर प्रकार की बुरी आत्मा के हानिकारक प्रभाव से बचाने के अतिरिक्त माध्यम देती थी।

बेशक हमें पक्का पता नहीं है कि जिन विधर्मों की यहां बात की गई है उनमें से कोई कुलुस्से की कलीसिया में पाया गया था या नहीं, परन्तु पौलुस के पत्र से ऊपर लिखित समस्याओं में से किसी से भी निपटने के लिए शिक्षाएं दी गई है।

विकास (एवोल्यूशन) बनाम उत्पत्ति का विवरण

मैक पैटार्सन

ऐसे लोग हैं जो बाइबल को और एवोल्यूशन की थ्योरी दोनों को मानना चाहते हैं। इस प्रकार से इस शिक्षा को 'आस्तिक विकास' का नाम दिया गया है। यानि उनका कहना होता है कि परमेश्वर ने संसार को सृजा, बिल्कुल सही है, परन्तु उसने इसे विकास की प्रक्रिया के द्वारा सृजा है। परन्तु उत्पत्ति की पुस्तक के विवरण और बेमेल थ्योरी के बीच कई कठिनाइयां और विरोधाभास हैं। उनमें से कुछ इस प्रकार से हैं–

1. उत्पत्ति की पुस्तक बताती है कि पेड़ पौधों का अस्तित्व सूर्य के बनाए जाने से पहले था (उत्पत्ति 1:11-14)। दूसरी ओर एवोल्यूशन यह सुझाव देता हे कि पहला पौधा निकलने से लाखों साल पहले सूर्य चमक रहा था।

2. उत्पत्ति की पुस्तक बताती है कि पक्षियों को सृष्टि के पांचवें दिन में सृजा गया था, और कीड़े मकौड़ों और रेंगने वाले जन्तुओं सहित अन्य जीव-जन्तुओं को छठे दिन बनाया गया था (उत्पत्ति 1:21-24)। एवोल्यूशन की शिक्षा बताती है कि पक्षी, कीड़े-मकौड़ों तथा रेंगने वाले जीव-जंतुओं के आने से बहुत बाद में विकसित हुए थे।

3. उत्पत्ति की पुस्तक बताती है कि मनुष्य को परमेश्वर ने विशेष रूप से भूमि की मिट्टी से रचा था (उत्पत्ति 2:7; 3:19; 1 कुरिन्थियों 15:45)। विकास की शिक्षा दावा करती है कि मनुष्य बंदर जैसी किसी जानवर की संतान है।

4. उत्पत्ति की पुस्तक यह बताती है कि फलदार पेड़-पौधों मछलियों से पहले बनाया गया था (उत्पत्ति 1:11)। विकास इस बात का दावा करता है कि मछलियां फलदार वृक्षों से बहुत पहले विकसित हो गई थीं।

5. उत्पत्ति की पुस्तक स्पष्ट रूप में विश्वासी (सारे संसार में होने वाली) प्रलय के होने की बात करती है (उत्पत्ति 7:10-12, 17-20)। विकास ऐसी किसी भी प्रलय के होने को नकारता है।

इसे पूरी तरह से समझ लेने पर मैंने उस पर विश्वास किया जो परमेश्वर ने कहा है कि किसी मनुष्य की कल्पना पर तथा बाइबल का पक्ष लेने पर हम कभी गलत नहीं हो सकते और न होंगे।

सृष्टि के सम्बंध में बाइबल क्या कहती है?

डॉन एल. नॉरवुड

हमारा परमेश्वर जिसने संसार को सृजा है, वो अनादि परमेश्वर है। वह सदा से है और सर्वशक्तिमान है। भजन लिखने वाले को यह लिखने की प्रेरणा दी गई, इस से पहिले कि पहाड़ उत्पन्न हुए, वा तू ने पृथ्वी और जगत की रचना की, वरन अनादिकाल से अनन्तकाल तक तू ही ईश्वर है, (भजन 90:2)। आदि में तू ने पृथ्वी की नींव डाली, और आकाश तेरे हाथों का बनाया हुआ है (भजन 102:25)। इसलिए बाइबल इन शब्दों के अनुसार आरंभ होती है, आदि में परमेश्वर आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की (उत्पत्ति 1:1)। वास्तव में सृष्टि को परमेश्वर के वचन के द्वारा रचा गया था (यूहन्ना 1:1, 14; कुलुस्सियों 16; इब्रानियों 1:2; भजन 33:6-9)।

परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी (संसार) को छह दिनों में बनाया और सातवें दिन विश्राम किया (निर्गमन 31:17)। ये दिन आज के दिनों की तरह ही सामान्य दिन थे, जैसा कि उत्पत्ति 8:22 के साथ-साथ 2 पतरस 3:3, 4 में स्पष्ट बताया गया है। इस बात पर भी ध्यान दें कि यहूदी शब्द योम (जिसका अनुवाद दिन किया जाता है) दिन ही है, जिसे हम दिन-रात के रूप में जानते हैं। फिर उत्पत्ति 1:5 का बड़े ध्यान से अध्ययन करें। सुबह-शाम के उजियाले वाले भाग को दिन कहा गया है। अंधेरे को रात कहा गया है (देखें भजन 74:16)।

सृष्टि के पहले ही दिन, ज्योति को अस्तित्व में लाया गया। परमेश्वर ने ज्योति को अंधकार से अलग किया।

दूसरे दिन उसने आकाश (आसमान) को बनाया। और ऊपर के जल को आकाश के नीचे के जल से अलग कर दिया। फिर परमेश्वर ने ऊपर के आसमान को आकाश कहा।

तीसरे दिन उसने आकाश के नीचे के जल को इकट्ठा करके उन्हें अलग किया ताकि सूखी भूमि दिखाई दे सके। उसने भूमि को पृथ्वी और जल को समुद्र कहा।

परमेश्वर ने चौथे दिन पृथ्वी को प्रकाश देने और चिन्हों, दिनों और वर्षों को संचालित करने के लिए आकाश में सूर्य और चांद को रखा (उत्पत्ति 1:4)।

पांचवें दिन परमेश्वर ने समुद्र के जीवों और आकाश में पृथ्वी के ऊपर उड़ने वाले पक्षियों को बनाया।

छठे दिन परमेश्वर ने पृथ्वी पर रहने के लिए जीवित प्राणियों को बनाया। इस सृष्टि में सबसे बड़ी मनुष्यजाति ही थी, जिसे परमेश्वरर के स्वरूप में बनाया गया और पृथ्वी पर सब जीवों पर अधिकार दिया गया (उत्पत्ति 1:27, 28)।

सातवें दिन उसने अपने काम से आराम किया (उत्पत्ति 2:1-4)।

यदि हम यह विश्वास कर सकते हैं कि परमेश्वर ने बिना किसी चीज से इन सब चीजों को बनाने की सामर्थ थी तो हमें यह विश्वास करने में कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए कि वह उन्हें फौरन बना सकता था, यानी दिन को उसी रूप में जैसा कि उसके प्रकट किए गए वचन में बताया गया है।

लुदिया - एक अच्छा उदाहरण

सूज़ी फ्रैड्रिक

प्रेरितों के नाम की पुस्तक के सोहलवें अध्याय में हम एक स्त्री के विषय में पढ़ते हैं जिसका नाम लुदिया था। आईये उसके उदाहरण से तीन बातें सीखें।

लुदिया एक बहुत धार्मिक स्त्री थी। यद्यपि लुदिया अपने शहर थुआथीरा में नहीं थी परन्तु वह हमें एक ऐसे स्थान पर दिखाई देती है, जहां लोग प्रार्थना करने के लिये इकट्ठे होते थे। पौलूस और उसके साथियों से उसकी मुलाकात होती है। पौलुस ने देखा कि जहां वह है, वहां और भी स्त्रियां प्रार्थना करने के लिये इकट्ठी हुई हैं। (प्रेरितों 16:13)। जब पौलूस ने वहां स्त्रियों को प्रचार किया तब लुदिया ने बड़े ही ध्यान से उसके प्रचार को सुना। पौलुस के प्रचार से लुदिया को यह निश्चय हो गया कि वह धार्मिक तो है परन्तु पूर्ण रूप से उसने परमेश्वर की इच्छा का पालन नहीं किया है।

क्योंकि लुदिया ने खुले मन से पौलूस द्वारा कही गई बातों को स्वीकार किया था इसलिये उसने तुरन्त बपतिस्मा लिया (14 और 15 आयत)। उसने यह नहीं कहा, ''मैं अपने धार्मिक जीवन से सन्तुष्ट हूं तथा जैसी मैं हूं, परमेश्वर मेरा उद्धार करेगा।'' परन्तु इसके विपरीत उसने परमेश्वर द्वारा दी गई योजना को माना। आज बहुत से ऐसे लोग हैं जो सत्य को जानते हुए भी, इसे मानना नहीं चाहते। वे बपतिस्मा इसलिये नहीं लेना चाहते क्योंकि वे अपने घरवालों या प्रचारक तथा समाज से डरते हैं। वे एक सच्ची कलीसिया के विषय में जानते हुए भी उसके सदस्य बनना नहीं चाहते।

बपतिस्मे के तुरन्त बाद लुदिया ने हमें अपने जीवन का एक और अच्छा उदाहरण दिया। उसने पौलूस तथा उसके साथियों की काफ़ी मेहमान नवाज़ी की तथा उन्हें अपने घर ले गई। (15 आयत)। हम मसीहीयों को यह आज्ञा दी गई है कि हमें अतिथि सत्कार करने वाला होना चाहिए। (रोमियों 12:13)। हमें ऐसे अवसरों की खोज में रहना चाहिए जब हम अपनी आशीषों को दूसरों के साथ बांट सकें।

आईये लुदिया के उदाहरण को सामने रखकर हम धार्मिकता में, आज्ञा पालन करने में तथा अतिथि सत्कार करने में सर्वदा आगे बढ़ें।

व्यक्तिगत विश्वास

डेविड रोपर

यह हमें विचार के मामलों पर महत्वपूर्ण कथन पर ले आता है, हर एक अपने ही मन में निश्चय कर लें (आयत 5ख) ''निश्चय कर ले'' जिसका अर्थ है, ''पूरे माप में''। रोमियों 4:21 में इस शब्द का अनुवाद ''निश्चय जाना'' किया गया है। हर व्यक्ति को अपने मन में पूरी तरह से निश्चित होना चाहिए।

कई लोग यह मान लेते हैं कि यदि यह आमतौर पर मान लिया जाए कि कोई मुद्दा विचार के दायरे में हैं तो उन्हें इस पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है। पौलुस ने संकेत दिया कि ऐसा नहीं है। किसी भी मुद्दे के विषय में हमें विचार करने, अध्ययन करने, प्रार्थना करने और अपने मन बनाने की आवश्यकता होती है। हमें उस मामले में हमारे लिए परमेश्वर की इच्छा के विषय में ''पूरी तरह से विश्वास'' होना आवश्यक है। यदि यह विचार के दायरे में आता है तो हम दूसरों पर अपने निर्णय थोपते हैं; परन्तु व्यक्तिगत विश्वास प्रभु की महिमा के लिए समर्पित जीवन जीने के लिए आवश्यक है।

पहले इस पाठ में हमने एक मुद्दा उठाया था कि मसीही लोगों को सिपाही या सैनिक के रूप में सेवा करनी चाहिए या नहीं। कई क्षेत्रों में इसे विचार के दायरे में रखा जाता है, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि यह मुद्दा महत्वहीन है या इस मामले पर आपके विश्वास से कोई फर्क नहीं पड़ता। जहां भी आप रहते हैं, वहां पाए जाने वाले विचार को बिना संदेह के स्वीकार न करें इसके बजाय नये नियम की उन सभी आयतों का अध्ययन करे, जो आपको लगती है कि यह विचार योग्य हैं। जब तक आपको अपने मन में ''पूरी तरह से विश्वास'' न हो जाए तब तक अध्ययन और प्रार्थना करते रहे।

परमेश्वर का उद्देश्य (आयत 6)

इसके साथ ही इस मुद्दे या विचार के अन्य मामलों पर आपसे जान-बूझकर असहमत होने वालों का न्याय न करें या उन्हें दोषी न ठहराएं, क्यों। आयत 6 हमें हमारे वचन पाठ का पहला कारण देतीहै कि हमें किसी भाई को दोषी नहीं ठहराना है, क्योंकि हम दोनों प्रभु की महिमा करने के प्रयास में हैं। पौलुस ने कहा, जो किसी दिन को मानता है, वह प्रभु के लिए मानता है (आयत 6क)। अन्य शब्दों में वह अपने लाभ के लिए नहीं, बल्कि प्रभु के लाभ के लिए ऐसा कर रहा है। वह ऐसा प्रभु के सम्मान में करता है। यह इस बात को मान लेता है कि उसके मन में यह ईश्वरीय उद्देश्य है। हो सकता है कि हमेशा ऐसा न हो, परन्तु प्रेम हमेशा बेहतरीन मानने की कोशिश करता है।

यूनानी धर्मशास्त्र में दिन को न मानने वाले का उल्लेख नहीं है; इसके बजाय पौलुस मांस खाने या मांस न खाने के अपने मुख्य उदाहरण में वापस चला जाता

है। परन्तु हम संदर्भ से बातें एकत्रित कर सकते हैं कि जो दिन को नहीं मानता, उसमें भी जो कुछ वह करता है उसे 'प्रभु के लिए' करना चुना है।

आयत 6 के पिछले भाग में पौलुस अध्याय के आरम्भ में दिए उदाहरण में वापस आ गया। उसने इस उदाहरण का इस्तेमाल अपनी शेष चर्चा के लिए जारी रखा (देखें 15, 17, 20, 21, 23); जो (मांस) खाता है, वह प्रभु (उसे आदर देने के लिए) के लिए खाता है, क्योंकि वह परमेश्वर को धन्यवाद करता है, और जो (मांस) नहीं खाता, वह प्रभु के लिए नहीं खाता और परमेश्वर का धन्यवाद करता है (आयत 6ख)। अन्य शब्दों में एक भाई ने रात्रि भोज के लिए भुना हुआ गोश्त और आलू रखे हैं, जबकि दूसरे के पास भुट्टे और दालें हैं, परन्तु दोनों ही अपने भोजन के लिए प्रभु को धन्यवाद देते हैं। दोनों परमेश्वर को महिमा देते हैं और दोनों परमेश्वर का आदर करने का प्रयास करते हैं। तो फिर उनमें से कोई भी दूसरे पर दोष क्यों लगाए?

आयत 6 में मुख्य शब्द 'प्रभु' है। इस आयत में यह शब्द तीन बार मिलता है। हमारा ध्यान प्रभु पर होना आवश्यक है। उसकी महिमा करना, उसका आदर करना और उसे भाना, इन विचारों से कहीं महत्वपूर्ण है कि हम क्या खा सकते हैं या क्या नहीं खा सकते।

इस्राएल के अविश्वास का भेद

जे. लाकहर्ट

इसलिए मैं नहीं चाहता कि तुम इस भेद से अनजान रहो, कि जब तक अन्य जातियां पूरी रीति से प्रवेश न कर लें, तब तक इस्राएल का एक भाग ऐसा ही कठोर रहेगा (रोमियों 11:25)।

यहूदियों ने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि वे मसीहा को ठुकरा देंगे। वे उसके आने की राह देखते थे। हर यहूदी मां को यही उम्मीद होती थी कि उसका बेटा ही मसीहा होगा। परमेश्वर को मालूम था कि जब वह अन्त में मसीहा को भेजेगा तो यहूदी लोग उसे ठुकरा देंगे। यह परमेश्वर के गुप्त भेदों में से एक था।

देहधारी हुए परमेश्वर का भेद।

ताकि उनके मनों में शान्ति हो और वे प्रेम से आपस में गठे रहें, और वे पूरी समझ का सारा धन प्राप्त करें, और परमेश्वर पिता के भेद को अर्थात् मसीह को पहचान लें (कुलुस्सियों 2:2; देखें इफिसियों 1:9)।

यहूदी लोग आस-पास के देशों के दबाव से लोगों को छुड़ाने के लिए एक महान सैनिक नेता, राजनैतिक उद्धारकर्त्ता की राह देखते थे। उन्होंने कभी सपना भी नहीं देखा था कि उनका मसीहा मानवीय देह में परमेश्वर होगा। संसार की नींव रखने से पहले परमेश्वर ने इस सबकी योजना बना ली थी। पर यीशु के पुनरुत्थान

तक यह सब गुप्त रहा था। अब इसे खुलेआम बता दिया गया है कि मसीहा कोई और नहीं बल्कि मानवीय देह में परमेश्वर है।

मसीह के निवास स्थान का भेद।

अर्थात् उस भेद को जो समयों और पीढ़ियों से गुप्त रहा, परन्तु अब उसके उन पवित्र लोगों पर प्रकट हुआ है। जिन पर परमेश्वर ने प्रकट करना चाहा, कि उन्हें ज्ञात हो कि अन्य जातियों में उस भेद की महिमा का मूल्य क्या है? और वह यह है, कि मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है (कुलुस्सियों 1:26, 27)।

यहूदी लोग यरूशलेम में दाऊद के सांसारिक सिंहासन पर बैठने के लिए भी मसीहा की राह देखते थे, परन्तु परमेश्वर ने अपने मसीह को हमेशा अपने लोगों के मनों के सिंहासनों पर बैठाने की इच्छा की, जैसे वह उनमें रहता था। किसी नबी ने कभी इस सच्चाई की कल्पना नहीं की। यह परमेश्वर के गुप्त रहस्यों में से एक और है जो कभी परमेश्वर के मन में छुपा हुआ था। परन्तु अब प्रकट कर दिया गया है।

अमरता का भेद।

देखो, मैं तुम से भेद की बात कहता हूं, कि हम सब तो नहीं सोएंगे, परन्तु सब बदल जाएंगे। और यह क्षण भर में, पलक मारते ही पिछली तुरही फूंकते ही होगा, क्योंकि तुरही फूंकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएंगें, और हम बदल जाएंगे। क्योंकि अवश्य है, कि यह नाशवान देह अविनाश को पहिन ले और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले (1 कुरिन्थियों 15:51-53)।

यूनानियों का मानना था कि देह बुराई है और मृत्यु मनुष्य की आत्मा को देह की कैद से छुड़ा देती है। पौलुस ने यह तर्क देते हुए कि परमेश्वर हर व्यक्ति को एक दिन अविनाशी अर्थात् अमर देह देगा, इस अवधारणा में सुधार किया। यीशु मसीह के शारीरिक पुनरुत्थान के द्वारा परमेश्वर ने मनुष्य के अविनाशी होने के रहस्य को खोल दिया।

मसीह की देह का भेद।

क्योंकि किसी ने कभी अपने शरीर से बैर नहीं रखा, वरन उसका पालन-पोषण करता है, जैसा मसीह भी कलीसिया के साथ करता है। इस लिए कि हम उसकी देह के अंग है। यह भेद तो बड़ा है; पर मैं मसीह और कलीसिया के विषय में कहता हूँ (इफिसियों 5:29-32)।

जो कुछ हमें पता चलता हैं उसके अनुसार रहकर हम अपने समाजों को परमेश्वर के महानतम रहस्यों में से एक अर्थात् यह भेद बताते हैं कि हम मसीह की देह बनते हैं और संसार में उसके उद्देश्य को पूरा करने के लिए मिलकर काम करते हैं।